Part III 1400.
P. VIII

गुप्तसाम्राज्य के चांदी के सिक्कों पर प्रकाश डालें ?

Question 4, Discribe The silver coinse of Gupta dynesty',

Ans. गुप्तयुग की हिन्दू कला में मौलिक-स्वच्छ नव निर्माण शक्ति थी जिसे केवल स्थापत्य कला में ही नहीं बल्कि सिक्कों पर भी देख सकते है। इस स्वर्णयुग में कोई नरेश एक प्रकार या एक धातु की मुद्रा से संतुष्ट नहीं था। उन्होंने सोने, चांदी तथा तांबे के सिक्के तैयार करवाये। इसलिए मुद्राशास्त्र के क्षेत्र में गुप्त साम्राज्यों की मुद्रा विशेष स्थान रखती है। मुद्राशास्त्रियों का ऐसा मत है कि प्राचीन भारत में प्रत्येक इलाके में विशिष्ट प्रकार और धातु के सिक्के रहते है। जिस प्रांत में स्वर्ण रजत तथा तांबे के सिक्के चलते रहे उस प्रांत में नये विजेता को उसी धातु का सिक्का तैयार करना पड़ता था। गुप्तराजाओं में सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त द्वितीय ने चांदी के सिक्कों का प्रचलन किया। विद्वानों का ऐसा मत है कि उसने मालवा, गुजरात, तथा काठियावाड़ को जीतने के बाद ही इस धातु के सिक्के चलवाये। क्योंकि इस इलाके में लोग पहले ही से चांदी के अहहास सिक्के का प्रयोग करते थे। अतः शेष शासकों के समान पश्चिमी भारत में उसे उसी तरह के चांदी के सिक्के लोकप्रिय सिक्कों को चलाना पड़ा।

चन्द्रगुप्त II के चांदी के सिक्के पश्चिमी भारत ही में मिलते है। उससे यह अनुमान लगाया जाता है कि अन्यप्रांतों में इन्हें जारी करने का कोई विचार नहीं था। इसके द्वारा मालवा, गुजरात, तथा काठियावाड़ की विजय तिथि ठीक-ठीक ज्ञात नहीं है, अनुमानतः यह उसके शासन के अंतिम समय में हुई होगा। अतः चांदी के सिक्के भी उसके लम्बे शासन अवधि के अंतिम दिनों में तैयार किये गये होंगे। उन पर लिखित तिथि गु.स. 90 अर्थात ई० सन. 409 है। चन्द्रगुप्त II के सांची तथा उदयगिरी गुहालेखों के आधार पर यह अनुमान किया जाता है कि उसने चौथी शताब्दी के

के अंत में शकों को पराजित किया था। कुछ विद्वानों का तो ऐसा भी मत है कि उसने इस घटना की यादगारी के लिए केवल चाँदी के ही सिक्के नहीं चलवाये बल्कि परम्परागत मालवा सम्वत् का नाम बदलकर गुप्त सम्वत् रख दिया। ऐसा विचार किया जाता है कि जब उसने पश्चिमी भारत पर आक्रमण किया वहाँ का शासक रुद्रसिंह था यह बात भी जान पड़ती है कि क्योंकि चन्द्रगुप्त II के सिक्के रुद्रसिंह के सिक्के के आधार पर ही तैयार करवाये गये थे।

द्वितीय चन्द्रगुप्त के सिक्के को दो भाग में बँट गया है। पहले वर्ग में मुद्रा लेख विक्रमादित्य से समाप्त हो जाता है। उसमें राजा के कुल का नाम नहीं है। दूसरे वर्ग में लेख विक्रमांक से अंत होता है तथा उसमें राजकुल का नाम यह कहना मुश्किल है कि कौन सिक्के पहले तैयार करवाये होंगे। हो सकता है कि दोनों एक साथ तैयार किये गये होंगे। उनमें से एक गुजरात तथा दूसरा काठियावाड़ के भाग में चलाया गया हो।

Chandragupt II

**सिक्कों का वर्णन** —

**पहला वर्ग** — अग्रभाग — दाहिने राजा का अर्द्धचित्र उसके गर्दन पर लम्बे बाल तक रहे थे। कभी-कभी चेहरे पर लम्बे बाल तक रहे थे। कभी-कभी चेहरे के सामने यूनानी अक्षरें कभी शिर के पीछे तिथि वर्ष - 90।

**पृष्ठभाग** — मध्य में पंख फैलाये गरुड़ दाहिने ऊपर सात बिन्दुओं का समूह। 11 में अथवा तीन बजे से प्रारम्भ वृत्ताकार मुद्रालेख ~~परिम~~ परम भागवत महाराजाधिराज ~~श्री~~ श्री चन्द्रगुप्त ~~स्य~~ ~~श्री मन्दिरय~~ विक्रमादित्य ~~स्य~~

**दूसरा वर्ग** — अग्रभाग पहले के समान ही

पृष्ठभाग पहले के समान मुद्रा लेख — श्रीगुप्तकुलस्य महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त II विक्रमांकस्य

द्वितीय चन्द्रगुप्त के पुत्र तथा उत्तराधिकारी प्रथम कुमार गुप्त ने सोने के समान चांदी के सिक्के में भी अपनी नव निर्माण की प्रवृत्ति को दिखलाया और अपने पिता के समान गुजरात तथा मालवा के लिए उसने चांदी के सिक्के का प्रचलन जारी किया। किन्तु उसने गंगा घाटी के प्रांतों के लिए चांदी के सिक्कों में नये प्रकार का समावेश किया जिसके कुछ हद तक पैत्रिय सिक्कों का अनुकरण रहते हुए भी कलीगरों तथा चिह्न समूहों में नवीनता तथा मौलिकता है।

" ऐलन ने प्रथम कुमार गुप्त की रजत मुद्राओं को सात भागों में बांटा गया है।

Kumargupta I

① **पहला वर्ग** :— इस वर्ग के सिक्के द्वितीय चन्द्रगुप्त के रजत मुद्राओं के समान है। अग्रभाग पर राजा का अर्धचित्र अंकित किया गया है। अधूरी यूनानी अक्षरों के अवशेष भी दीख पड़ते हैं। पृष्ठ भाग पर गरुड़ का चित्र तथा बिन्दुओं का समूह अंकित है।

मुद्रालेख "परमभागवत महाराजाधिराज श्री कुमार गुप्त महेन्द्रादित्य" इस वर्ग के सिक्कों को चार प्रकार में बांटे गये हैं।

**दूसरा वर्ग** — इसमें अग्रभाग में राजा का अर्धचित्र बहुत ही नये ढंग से अंकित है। यूनानी भाषा का अभाव है। पृष्ठभाग पर गरुड़ का चित्र है किन्तु बिन्दु समूह नहीं दिखाया गया है।

~~तीसरा वर्ग — अग्रभाग पर दाहिने राजा के अर्धचित्र अंकित है। पृष्ठ भाग पर त्रिशूल उसके नीचे~~

**तीसरा वर्ग** — पहले के समान है। आकार में छोटे तथा मोटे हैं। इन्हें दो उपवर्गों में बांटा गया है।

**चौथा वर्ग** — अग्रभाग पर दाहिने राजा

राजा का अर्द्धचित्र अंकित है पृष्ठ भाग पर त्रिशूल-
उसके नीचे — परम भागवत महाराजाधिराज श्री
कुमार गुप्त महेन्द्रपः अंकित है।

पाँचवा भाग — मध्यप्रदेश अथवा गंगाघाटी
की रजत मुद्राएं हैं। अग्रभाग पर राजा का
अर्द्धचित्र पृष्ठ भाग पर गरुड़ के स्थान पर पंख फैलाये
मोर की आकृति अंकित की गयी है। मोर का सम्बंध
कुमार कार्तिकेय से हो सकता है।
जिसका वाहन मोर था। इसी देवता के नाम
पर प्रथम कुमार गुप्त का नामकरण हुआ था।
इस वर्ग के सिक्कों को चार उपवर्गों में बांटा
गया है। मुद्रालेख, विजितावनिरवनिपत कुमारगुप्तो दिवं जयति
वाग् रवानी पतिः — कुमार गुप्तो
दिवं जयति। सिक्कों पर गुप्त संवत् तिथि अंकित हो

छठा प्रकार — काठियावाड़ से अनेक ताम्बे
के सिक्के मिले हैं। जिसे अग्रभाग पर वहेळा
से राजा का चित्र बना है। सिर बना है
पृष्ठ भाग पर चार गोल्ड के साथ घटुलकर
मुद्रालेख अंकित है। इस प्रकार के बहुत से
सिक्कों पर चाँदी का पानी चढ़ाया गया था
इसका औसत तौल २९ ग्रेन ही है। लेख
पहले वर्ग के समान है।

सातवाँ वर्ग — मध्यदेश के चाँदी के पानी
वाला सिक्का कम संख्या में मिला है।
इसके अग्रभाग पर क्षत्रिय शैली वाले ढंग से
राजा का चित्र अंकित है। पृष्ठ भाग पर
फैलाये पंख वाला मोर पाया जाता है। लेख
पूर्व वर्ग के समान है।

स्कन्दगुप्त — स्कन्दगुप्त के काल में भी चाँदी
के सिक्के भी प्रचुर मात्रा में तैयार करवाये गये।
इसने चाँदी तथा ताँबे दो प्रकार के सिक्के चलवाये।
पिता के समान ही इस सिक्कों को पश्चिमी
भारत शैली तथा मध्य शैली देशों में बांटा
जाता है।

पश्चिमी भारतीय शैली में तीन प्रकार के सिक्के मिले हैं।

पहला वर्ग — (गरुड़ प्रकार) इस प्रकार के सिक्कों के अग्रभाग पर प्रथम कुमारगुप्त तथा द्वितीय चन्द्रगुप्त के समान ही राजा की अर्द्धाकृति अंकित है। सिर के पीछे वर्ष, लेकिन तिथि का पता नहीं चलता पृष्ठ भाग पर टेढ़ी लहराकर लकीर के ऊपर खड़ा हुआ गरुड़ उसके नीचे यूनानी अक्षर, दाहिने सात बिन्दुओं का समूह वर्तुलाकार लेख था जो आगे भूवगें से युक्त — परम भागवत महाराजाधिराज श्री स्कन्दगुप्त क्रमादित्य। इसका औसत तौल 28 ग्रेन है।

दूसरा वर्ग (नन्दी प्रकार) इसका अग्रभाग पहले वर्ग के सिक्कों के समान है। किन्तु पृष्ठभाग पर घुटने पर बैठा हुआ नन्दी का चित्र मुद्रालेख अधूरा है जो सम्भवतः पहले के ही समान होगा। इसका औसत तौल 29 ग्रेन है

तीसरा वर्ग — (वेदी प्रकार) अग्रभाग पर पहले के समान राजा का चित्र। पृष्ठभाग के मध्य में वेदी जिसके ऊपर तीन लपटें उठी हुई हैं वर्तुलाकार लेख (कभी-कभी अधूरा) परम भागवत श्री विक्रमादित्य स्कन्दगुप्त: " इस प्रकार को तीन उप प्रकारों में बांटा गया है। पहले में विक्रम ही दूसरे में विक्रमादित्य स्वतीसरे में कोई उपाधि नहीं है। इसका औसत तौल 28 ग्रेन है।

चौथा वर्ग (मध्यप्रदेश प्रकार) अग्रभाग पर प्रथम कुमारगुप्त के समान राजा का चित्र जिसमें नाक चिपटी है तथा मूँछ नहीं है। चेहरे के सामने तिथि 144-145, 146, तथा 148 उत्कीर्ण है पृष्ठभाग पर फैलाये पंख वाले मोर की आकृति है वर्तुलाकार मुद्रालेख विजितावनिरवनिपति (विजितवानिरवनिपति जयति दिवं स्कन्द गुप्तोयम) लेख के अनुसार इसे दो उप प्रकारों में बांटा गया है। इसका औसत तौल उप प्रकार के 30 ग्रेन है।

(5) चैत्यप्रकार — कनिंघम ने इस सिक्के को प्रकाशित किया है। जिसके मुख भाग पर राजा का सिर, मूँछ के साथ अंकित है। पृष्ठभाग पर चैत्य चिह्न तथा लेख गुप्त लिपि में उत्कीर्ण है। कुमारगुप्त परममादित्य महाराजा स्कन्दगुप्त। प्रद्युम्न नदोदय ने भी इस प्रकार का एक सिक्का ~~प्रकाशित~~ किया था।

पुरुगुप्त, नरसिंह गुप्त तथा द्वितीय कुमार गुप्त के चांदी के सिक्के नहीं मिले हैं। स्कन्दगुप्त के पश्चात बुद्धगुप्त ने इसे फिर जारी करवाया किन्तु उसने केवल मध्य देशीय प्रकार ही तैयार करवाया। अभी तक पश्चिमी प्रकार के सिक्के प्रकाश में नहीं आये हैं। ऐसा लगता है कि पश्चिमी ~~भाग~~ प्रांत पर गुप्तों का अधिकार समाप्त हो गया था।

बुद्धगुप्त के सिक्के प्रथम कुमारगुप्त तथा स्कन्दगुप्त के मध्य देशीय प्रकार के सिक्के के समान ही हैं। चेहरे का रूप एक समान है, सामने अंक में तिथि लिखा है। यूनानी अक्षर नहीं मिलते। पृष्ठ भाग पर पंख फैलाये मोर का चिह्न अंकित है। लेख विजितावनिरवनिपतिः श्री बुद्धगुप्तो दिवं जयति उत्कीर्ण है। इसका औसत तौल 29 ग्रेन है। बुद्ध गुप्त के साथ ही चांदी के सिक्कों का चलना समाप्त हो गया।

अभी तक बुद्ध गुप्त के सर्वकाल 6 सिक्के प्राप्त हुए हैं 5 काशी तथा एक सारनाथ में। बनारस से प्राप्त सिक्कों पर 175 लिखा है तथा 6 180 पढ़ा गया है जो सन्देहात्मक है।

~~[illegible]~~